ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 332-333

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

बौद्ध धर्म भिक्षु, भिक्षुणी और संघः एक अध्ययन

देवेन्दु आलोक
एम0 ए0 इतिहास, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (उ0प्र0) भारत।

Received- 04.08.2020, Revised- 08.08.2020, Accepted - 15.08.2020 E-mail: - devendu.alok@gmail.com

सारांश : *गौतम बुद्ध ने विश्व में सबसे पहले विश्वधर्म स्थापित किया, जो कि केवल मनुष्य मात्र के लिए ही था। गौतम बुद्ध ने लोगों को मध्यम मार्ग बताया। सभी प्रकार के ढोंग और अंधविश्वासों को हटाकर बुद्धि, विवेक, दया, प्रेम के आधार पर सरल–पवित्र जीवन निर्वाह करने का आदेश दिया। भगवान बुद्ध के सर्वप्रथम पाँच शिष्य बने; फिर वे साथ हो गए। भगवान बुद्ध ने इन शिष्यों को संघ बनाकर उन्हें घुम–घुमकर अपने आदर्शों का प्रचार करने का आदेश दिया।1 भगवान बुद्ध ने सर्वप्रथम संघ की स्थापना सर्वप्रथम 'ऋषिपतत मृगदाय' में की थी और वही यशकुल पुत्र का पिता विश्व में सर्वप्रथम त्रिशरण ग्रहण किया था। बौद्ध, धर्म और संघ ये त्रिशरण कहलाते है। सभी उपासक–उपासिका, भिक्षु–भिक्षुणी को इन शरणों को ग्रहण करना पड़ता है। भगवान बुद्ध से पूर्व ऐसा संगठित भिक्षु संघ नहीं था।2 बौद्ध संघ के निर्माण की प्रशंसा करते हुए काशी प्रसाद जायसवाल ने लिखा है– बौद्ध संघ का स्थापना सारे विश्व के त्यागियों के सम्प्रदायों के जन्म का इतिहास है। भारतीय प्रजातंत्र के संघटनात्मक गर्भ से बुद्ध के धार्मिक संघ का जन्म का इतिहास केवल इन देशवासियों के लिए ही नहीं, बल्कि विश्व के लिए भी विशेष मनोरंजक होगा।3 श्री जायसवाल ने भिक्षु संघ की जो महत्ता बतलायी है वह तो स्वीकार्य है भारतीय गणतंत्र की देन कहना संगत नहीं लगता है। भगवान् का भिक्षु संघ एक पवित्र परिभाषा से युक्त था।4 जिसकी अनुस्मृति से ज्ञान की प्राप्ती हो सकती है। जिसकी मुहर्त भर की पूजा सौ वर्ष के अग्निहोत्र से श्रेष्ठ होता है।5*

कुंजीभूत शब्द– विश्वधर्म, मध्यम मार्ग, ढ़ोंग, अंधविश्वासो, विवेक, सरल–पवित्र, जीवन–निर्वाह, आदर्शों, प्रचार।

भगवान बुद्ध ने चालू आर्य सत्य जिसमें प्रथम आर्य सत्य दुःख है। पुरी सृष्टि में दुःख व्याप्त है। जन्म पीड़ादायक, वृद्धावस्था पीड़ादायक, रोग पीड़ादायक और मृत्यु भी पीड़ा दायक है। इसी प्रकार जीवन और मृत्यु का चक्र भी दुखदायी होता है।6

विशुद्धमार्ग में कहा गया है– "संघानुस्मृति में लगा हुआ भिक्षु संघ का गौरव और प्रतिपाल करने वाला होता है। वह श्रद्धा आदि में विपुलता को प्राप्त होता है। भय–भैरव को सहने वाला तथा दुःख को सहने की सामर्थ्यवाला होता है। संघ के साथ रहने का विचार होता है। संघगुणानुस्मृति के साथ रहनेवाला का शरीर एकत्र संघ के उपोरय गृह के समान पूजनीय होता है। संघ के गुण की प्राप्ती के लिए चित झुकता है। उल्लेखनीय वस्तुओं के आ पड़ने पर उसे संघ को सम्मुख देखने के समान लज्जा और संकोच हो जाता है। यदि वह ज्ञान नहीं प्राप्त कर लेता तो सुगति परायण होता है।7 ऐसे विमुक्ति की और ले जानेवाले संघ को प्रजातंत्र का अनुकरण मात्र कहना भिक्षु संघ की वास्तविक परिभाषा का अतिक्रमण करना ही होगा। गौतम बुद्ध का श्रावक संघ ज्ञानियों का संघ है। वह राग, द्वेष और मोह से रहित परम व शुद्ध भिक्षुओं का संघ है।

भगवान बुद्ध ने जिस पवित्र उद्देश्य से चारिका कर विश्व का कल्याण किया उसकी गुण–गरिमा वर्णनासीन है। प्रारम्भ में कुछ समय तक केवल भिक्षु संघ ही था, किंतु महाप्रजापति गौतमी के प्रव्रतित हो जाने के बाद भिक्षुणी संघ की भी स्थापना हो गयी। इन दोनों संघों ने आमोत्कर्ष के साथ ही 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' महान कार्य किया। भिक्षु संघ ने तथागत के धर्म–घोष से संसार को उद्घोषित किया तो भिक्षुणी संघ ने धर्म को दुन्दभी बजायी। भगवान संघ के चार अंग था जो इस प्रकार है– भिक्षु, भिक्षुणी उपासक और उपासिका। इनमें भिक्षु और भिक्षुणी गृह को त्यागकर मृक्ति मार्ग के पथिक हो गये हो और उपासक और उपासिका गृहवासी होते हुए इन गृह–त्यागियों के अवलम्ब थे।

बौद्ध धर्म में भिक्षु–भिक्षुणी, उपासक–उपासिका इन सभी का बौद्ध धर्म को विश्व धर्म बनाने में अमुल्यनीय व सराहनीय योगदान है। भगवान बुद्ध ने सदा इन बातों का ध्यान दिया कि भिक्षु और भिक्षुणी संघ में किसी भी बातों पर विवाद न हो। तथागत बुद्ध से सदैव मिलजुलकर व रहने पर जोर दिया। उन्होंने इस बात के महत्व को बतलाते हुए संघ की उन्नति के लिए सात अपरिहानीय धर्मो का उपदेश दिया था। वे साथ धर्म इस प्रकार है– बार–बार बैठक करना, एक साथ बैठना और उठना तथा संघ के कार्यों को

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

करना, नियमों का पालन करना; वृद्ध भिक्षुओं को सम्मान देना, बार–बार आवागमन में डालने वाली तृष्ण के वश में न पड़ना, अरण्यक शयनासनों में रहने की अभिलाषा करना तथा अपने गुरूभाइयों की सुख–सुविधा का ध्यान रखना।

तथागत बुद्ध ने भिक्षु को इन सात बातों का पालन जबतक करते रहेगें तब तक उनकी उन्नति होती रहेगी।8 यही धर्म भिक्षुणी संघ्ज्ञ के लिए भी उन्नतिगामी है।9 भगवान बुद्ध ने संघ के फुट की बहुत ही निदा की थी और उन्होंने यह भी कहा था कि जो संघ में जो फुट पैदा करता है नरकगामी होता है। संघ की एकता सुखदाय है और सुखदायक है मिलजुल कर रहने वाले का आग्रह भी है। संघ में मेल करके कल्प–भार वह स्वर्ग में आनन्द करता है।10 जो भी भिक्षु संघ में फुट डालता है उसे संघादिसेस की आपति होती है।11यही विधान भिक्षुणियों के लिए भी आचरणीय है।12 धम्मपद में भी भगवान् बुद्ध ने संघ की मेत्री को सुखदायक कहा है।

सुखों बुद्धानं उप्पादों सुखा सद्धम्मदेसना।
सुखा संघस्स सभागी समग्गीनं तपो सुखो।।13

यहाँ सुखदायक है बुद्धों का जन्म, सुखदायक है सधर्म का उपदेश, संघ में एकता सुखदायक है और अन्त में सुखदायक है एकतायुक्त हो तप करना।

ऐसा महान भिक्षु एवं भिक्षुणी संघ की शरण में जाकर आत्म–हित करने का आदेश विमानवधु में दिया गया है जो चार शुद्ध पुरूषों का युग्म है और जो धर्मराशी आठ पुरूष–पुदूगल है।, जिन्हें दिया गया दान महाफलदायक कहा गया है– उस संघ की शरण आओ।14

बुद्ध ने जब अपने धर्म का स्वरूप ठीक–ठीक संगठित देखा और उसे यह ज्ञात हो गया कि देश के सार्वजनिक जीवन में उसका आदर हुआ है तो उसने अपने धर्म को देश–देशान्तरों में फैलाने के लिए एक बौद्ध–संघ स्थापित किया। बौद्धो का यह संघ संसार के धार्मिक इतिहासों में सबसे अधिक प्रतिष्ठा का पात्र और सब संघों से श्रेष्ठ है।

बुद्ध उन स्त्री–पुरूषों को जिन्हें कि संसार से विरक्ति हो गई हो, बिना किसी जाति–भेद भाव के अपने संघ में शामिल कर लेते थे। बुद्ध के पूर्व शूद्र लोग सन्यासी और वानप्रस्थी नहीं हो सकते थे; लेकिन बुद्ध ने जाति–पॉति के भेद–भाव बिल्कुल उठा दिए थे, पर बहुत से ऐसे लोग भी थे कि जो बौद्ध–संघ में शामिल न हो सकते –एक वह जिन्हें छूत की बीमारी हो; दूसरे राज–पुरूष, तीसरे चोर जो दण्ड पा चुके हों; जो क्रीतदास हों; जो कर्जदार हों; जिनकी उम्र 15 वर्ष से कम हो और जो नपुंसक हों। संघ में भर्ती होने के पहले हरेक व्यक्ति को प्रव्रज्या ग्रहण करनी पड़ती थी। इसके बाद एक संस्कार किया जाता है। जिन्हें शिक्षा–पद कहा जाता था। इन्हें बौद्ध साहित्य में 10 शील के नाम से पुकारा जाता है। वे दस शील इस प्रकार के थे।

(1) हिंसा न करना, (2) चोरी न करना, (3) झूठ न बोलना, (4) नशा न करना, (5) व्यभिचार न करना, (6) असमय भोजन न करना, (7) खाट या बिछौने पर न सोना, (8) नाचने, गाने–बजाने में दिल न लगाना, (9) सोना–चाँदी काम में न लाना, (10) श्रृंगार न करना।

यदि पहले के पाँच शीलों के विरूद्ध कोई भिक्षु आचरण करता हुआ पाया जाता तो संघ उसे बाहर निकाल देता और अगर कोई पीछे के पाँच शीलों को भंग करते हुए पाया जाता जो उसे दण्ड दिया जाता था भिक्षु होने के पश्चात् इन चार नियमों (चारश्रियों) का विशेष तौर से पालन करना पड़ता था।

(1) सब प्रकार के व्यभिचारों से बचना–भिक्षा से प्राप्त भोजन।

(2) किसी पराई वस्तु पर लुब्ध दृष्टि न करना– चीचड़ों का बनाया गया चीवर

(3) पूर्ण अहिंसा का पालन करना– वृक्ष के नीचे निवास।

(4) किसी दैवी या अमानुषी शक्ति का दावा न करना– गो मूत्र का भेषज साथ ही इन चार पातकों से बचना पड़ता था– आगे नीचे काटे चार पातक दें।

उसे भिक्षु होने के पश्चात् दस वर्ष तक बिल्कुल अपने आचार्य के अधीन रहना पड़ता था। इस काल में भिक्षु और आचार्य का क्या सम्बन्ध रहना चाहिए, इस विषय में विनयपिटक के महावर्ग में बुद्ध ने कहा है– हे भिक्षुओ! आचार्य को चाहिए कि वह अपने शिष्य को अपने पुत्र की भाँति समझे और शिष्य को चाहिए कि वह अपने आचार्य को अपने पिता के समान समझे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आचार्य चतुरसेन शास्त्री, महात्मा बुद्ध और बौद्ध धर्म, परशुराम हिन्दी संस्थान, यमुना बिहार, पेज–7
2. हिन्दु राजतन्त्र, प्रथम खंड 08, पेज– 68
3. वही, पृष्ठ 72
4. अंगुतर निकाय।
5. धम्मपद, गाथा पेज– 106
6. देवेश ठाकुर, बौद्ध गाथा शैवाल प्रकारश्स गौरखपुर, पेज– 115
7. विशुद्धिमार्ग, प्रथम भाग, पेज नं0– 201
8. महापरिनिष्तान सुत्तं, पेज नं0– 13–15
9. विनयपिटक, पेज 593–94

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*